मैथ्यू आर्नल्ड का अंग्रेजी आलोचना में योगदान

— उदय भान भगत

मैथ्यू आर्नल्ड को उन्नीसवीं शताब्दी का मूर्धन्य आलोचक, यथार्थवादी काव्यचिंतक तथा प्रथम कोटि का कवि माना गया है। आधुनिक अंग्रेजी आलोचना का आरंभ इन्हीं से होता है। वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त थे। यह उनके लिए बड़े सम्मान और गौरव की बात थी। इस पद पर रहकर उन्हें आलोचना संबंधी अपने विचारों को अत्यंत प्रबुद्ध वर्ग के सामने प्रस्तुत करने का अवसर मिला। आर्नल्ड ने आलोचना का काम पेशे के रूप में किया। विश्वविद्यालयों में साहित्य के अध्यापक को आलोचक बनना ही पड़ता है, चाहे वे दूसरों के सिद्धांतों का उपयोग करें या अपने मनन-चिंतन के आधार पर कुछ मौलिक योगदान करें।

कलाकार देश, काल और परिस्थिति की उपज ही नहीं होता, वह इनसे नियंत्रित और निर्देशित भी हुआ करता है। आर्नल्ड भी इसके अपवाद नहीं थे। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ से ही इंग्लैंड में काव्य और विज्ञान के आपेक्षिक महत्व का विवाद चल पड़ा था और दोनों खेमों ने अपने-अपने पक्ष की स्थापना के लिए युक्तियाँ प्रस्तुत करनी प्रारंभ कर दी थी। विज्ञान का आक्रमण केवल काव्य पर ही नहीं हुआ, धर्म पर भी हुआ और संस्कृति भी अछूती नहीं रह सकी। तात्पर्य कि विज्ञान ने एक साथ काव्य, धर्म और संस्कृति के मूलोच्छेद का उपक्रम किया। जो लोग काव्य, धर्म एवं संस्कृति के स्थापित मूल्यों के पक्षधर थे उन्होंने विज्ञान के प्रत्याख्यान का बीड़ा उठाया। आर्नल्ड इस श्रेणी के विचारकों में अन्यतम हैं।

उन्होंने बड़ी प्रौढ़ि से काव्य की विपुल संभावनाओं को सामने रखा और यहाँ तक कहा कि काव्य धर्म का ही नहीं, विज्ञान का भी स्थान लेगा क्योंकि उसका प्रयोजन केवल आनंद ही नहीं, जीवन की आलोचना भी है। आर्नल्ड का कहना था कि काव्य और विज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। विज्ञान का, और बहुत दूर तक धर्म का भी, क्षेत्र सीमित है; विज्ञान मनुष्य की कोमल भावनाओं को सहलाने में असमर्थ है; धर्म से भी यह काम अंशतः ही सम्पन्न होता है। इसके प्रतिकूल काव्य का प्रभाव भाव और कल्पना पर तो पड़ता ही है, बुद्धि पर भी पड़ता है जिससे मनुष्य की क्रियाशक्ति को उचित दिशा मिलती है।

आर्नल्ड ने प्रत्येक क्षेत्र में पूर्णता को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। उनके अनुसार, संस्कृति पूर्णता का ही दूसरा नाम है और काव्य संस्कृति का अन्यतम साधक है। इस विषय को उन्होंने 'कल्चर एण्ड एनार्की'

नामक विस्तृत लेख में भलीभाँति स्पष्ट किया है। आर्नल्ड ने काव्य में रोमांटिक मान्यताओं को खंडित कर प्राचीन क्लासिकल सिद्धान्तों की पुनःस्थापना पर बल दिया। उन्होंने आलोचना की जिस पद्धति और शिल्प का विकास किया वह बाद के आलोचकों द्वारा ग्रहण किया गया। आर्नल्ड काव्य में सरलता, स्वाभाविकता आदि अभिजात गुणों के समर्थक थे जिनका प्रयोग उन्होंने काव्य में ही नहीं, आलोचना में भी किया।

आर्नल्ड की धारणा थी कि महान् काव्य के लिए उसकी विषयवस्तु उदात्त होनी चाहिए और शैली भव्य। उनकी धारणा थी कि सामयिक विषयों पर लिखा गया काव्य चिरस्थायी नहीं हो सकता। एक सीमा तक आर्नल्ड की यह मान्यता सही भी है। सामयिक विषयों की उपादेयता समाप्त हो जाने के बाद उनका महत्व भी समाप्त हो जाता है। आर्नल्ड काव्य को सांस्कृतिक उन्नयन और परिष्करण का साधन मानते हैं, अतः उनके लिए काव्य केवल आनंद का ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उन्नयन का भी साधन है। काव्यालोचन में दार्शनिकता के अतिरेक के भी आर्नल्ड विरोधी हैं। उनका कहना है कि इससे आलोचना अमूर्त हो जाती है और अपने उद्देश्य में सफल नहीं होती। आलोचना वह साधन है जिससे मानव-जीवन को अधिक स्वस्थ, सार्थक और फलप्रद बनाया जा सकता है। दार्शनिक अमूर्तता उसमें बाधक होती है।

आर्नल्ड की आलोचना केवल काव्य तक सीमित नहीं है; उसकी सीमा का विस्तार संस्कृति, धर्म, शिक्षा आदि तक है। काव्य को जीवन की आलोचना कहने का अभिप्राय ही है जीवन को समग्रता में देखना और जीवन के किसी पक्ष की आलोचना न करना।

समस्त यूरोप को एक बौद्धिक संघ के रूप में देखने का प्रस्ताव आर्नल्ड के उस विशाल वैचारिक परिप्रेक्ष्य को आलोकित करता है जिसमें देश काल की संकीर्णता का कहीं स्थान नहीं है। अपने देश के संकीर्णताग्रस्त अभिजात वर्ग को बर्बर कहने तक में आर्नल्ड को कोई संकोच नहीं हुआ। उन्होंने अंग्रेज जाति की पृथकवादी नीति एवं भावना का जोरदार विरोध किया और अपने साहित्य को यूरोप के

ने नवीन-प्राचीन साहित्यों के बीच रखकर समझने-परखने का प्रस्ताव किया, जिसके फलस्वरूप तुलनात्मक साहित्य का क्षितिज विस्तृत हुआ।

आर्नल्ड के पूर्ववर्ती आलोचक राजनीतिक, ऐतिहासिक आदि पूर्वग्रहों से आक्रांत थे; शुद्ध साहित्यिक विवेचन की उनमें कमी थी। आर्नल्ड ने कहा कि साहित्येतर मानदंड साहित्य के मूल्यांकन में बाधक है, अतः उनका परित्याग आवश्यक है। आलोचक को निस्संग होना चाहिए अर्थात् साहित्य के बोध, आस्वाद या मूल्यांकन में किसी ऐसे तत्व को प्रमुखता नहीं देनी चाहिए जिसका साहित्य से साक्षात् संबंध न हो। 'निस्संगता' वाला सूत्र भी इलियट को आर्नल्ड से प्राप्त हुआ है।

मैथ्यू आर्नल्ड की विशेषताओं को स्कॉट जेम्स ने आकलन करते हुए लिखा है- "हममें से कौन उस आलोचक को श्रद्धांजलि नहीं अर्पित करेगा जिसके संबंध में सच्चाई से यह कहा जा सकता है कि उसने जीवनतंत्र के दांते से अपने को मुक्त किया, उसने ज्ञान के लिए ज्ञान का अनुवर्तन किया, उसने माधुर्य और आलोक के लिए विचारों में अभिरुचि ली; उसने उत्तम विचारों के प्रसार तथा जीवन में विनियोग के लिए निरंतर प्रयास किया; उसने जो नूतन ज्ञान प्राप्त किया था, उसे संसार में संचारित किया; और विश्व के विचार-प्रवाह के केन्द्र में सदा रहने की चेष्टा करते हुए उसने संकीर्णता की भ्रांतियों को दूर रखा।"

अतः आर्नल्ड अंग्रेजी आलोचना साहित्य के प्रकाश स्तम्भ हैं, जिन्होंने निर्भीक होकर आलोचना का मार्ग प्रशस्त किया। वे अंग्रेजी साहित्य के अरस्तू हैं। पाश्चात्य आलोचना के इतिहास में उनका स्थान अमर है और कीर्ति अक्षय।

Short Question B.A. 6th Sem

Q.1: कौन किसे अपने 'विद्यापीठ का मस्तिष्क' कहता था? (2)

उत्तर:- प्लेटो के विद्यापीठ में जब अरस्तू का प्रवेश हुआ तो अरस्तू की मनीषा और विद्याव्यसन से उल्लसित होकर आचार्य प्लेटो ने अरस्तू को अपने "विद्यापीठ का मस्तिष्क" कहा था।

Q.2 - दास-प्रथा से मुक्ति का 'प्रथम घोषणा-पत्र' किस कृति को और क्यों कहा गया है? (2)

उत्तर:- दास-प्रथा से मुक्ति का प्रथम घोषणा-पत्र अरस्तू के वसीयतनामा नामक कृति को माना गया है। इस कृति के द्वारा उन्होंने अपने सभी दासों को दासता से मुक्त कर दिया था। इतिहास में इस वसीयतनामा को दासता की प्रथम मुक्तिघोषणा होने का श्रेय दिया जाता है।

Q.3. मैथ्यू आर्नल्ड द्वारा रचित दो ग्रंथों के नाम लिखिए।

उत्तर:- कल्चर एंड एनार्की तथा एसेज इन क्रिटीसिज्म।

Q.(4) मैथ्यू आर्नल्ड की कल्चर एण्ड एनार्की किस प्रकार की कृति है?

उत्तर:- "कल्चर एण्ड एनार्की" पत्रिकाओं की श्रृंखला लेख अथवा विस्तृत लेख है।